शांति और सदभावना के इजहार करते-राखी के दो तार

बंधन किसी भी व्यवस्था को सुव्यवस्थित करने तथा उसे सुचारू रूप से चलाने में सहायक होता है। चाहे वह मर्यादा, प्यार, अहिंसा अथवा सामाजिकता का बंधन हो। परन्तु सभी का मकसद एक ही होता है व्यवस्थाओं अथवा संरचना को यथावत बनाये रखा जाये। मन के चंचल उड़ानों को शांतिदायिनी और सद्भावना युक्त बनाने के लिए ही राखी का पर्व बनाया गया है। राखी एक रूहानी पर्व है इससे ही मानव संसार सागर की तमाम हलचलों में से अमृतमय सम्बन्ध ढूढ़ पायेगा। जैसे असीम जल राशि वाले समुद्र के तटबन्धों के सहारे बहुतेरे लाभ उठाये जाते। पल-पल भागते समय ऋतु, मास, दिवस, घंटा, मिनट में बांधकर जीवनचर्या व्यवस्थित की जाती है। मनुष्य समुदाय को गुण-कर्मों के प्रमाण सेवा में नियोजित कर समाज को रंग-विरंगें जीवन का गुलदस्ता बनाया जाता है। पर कोई इन व्यवस्थित बन्धनों में विघ्न डालता तो उसे दण्डितकर, व्यवस्था को संरक्षण दिया जाता है। वैसे ही भाई-बहन जैसे आत्मीय प्यार के बन्धन को समाज व सामाजिक संविधान द्वारा रक्षाबन्धन के रूप में सम्पूर्ण संरक्षण व परिपोषण दिया जाना चाहिए।

समुद्र पार कर लेना, एवरेस्ट पर चढ़ जाना, कांटों की शैय्या पर सोये रहना सरल है पर मन को एकाग्र कर लोक मंगल में जोड़ना.....? जबकि अविनाशी आत्मा के मन में उत्कर्ष की असीम संभावनायें हैं। मन की उड़ानों को रक्षाबन्धन जैसे पावन सूत्रों में बांधकर नर को नारायण जैसा सतोप्रधान बनाया जा सकता है। पर पौराणिक कथानकों के अनुसार रक्षा सूत्रों को लोग नारी संरक्षण का ही प्रतीक मानते हैं। जैसे फिरोज शाह द्वारा नागौर किले की घेरा बन्दी किये जाने पर राजा मानसिंह की पुत्री पन्ना द्वारा उम्मेद सिंह को भाव भरे पत्रों के साथ भेजी हुई राखी ने किले की पराजय व क्षत्राणियों को जौहर से बचाया, महारानी पदमिनी द्वारा हुमायूँ को भेजी गयी राखी ने चित्तौड़ की ललनाओं को संरक्षण दिया आदि-आदि...। परन्तु रक्षाबन्धन तो भाई-चारे जैसे सतोगुणी जीवन द्वारा सत धर्म की रक्षा करने वाला है। इससे पाठ लेकर जो मनसा-वाचा-कर्मणा व तन-मन-धन, सम्बन्ध-सम्पर्क में पवित्र रहने का व्रत लेते हुए शांति-सद्भावना बनाये रखने हेतु तत्पर रहते तो उच्च धारणाओं द्वारा उनकी रक्षा स्वत: होती रहती है। नहीं तो विकारों से जकड़ा हुआ जीवन, यमराज की यातनाओं से टूट नहीं सकता। बहनों द्वारा बांधे जाने वाले कच्चे धागों के बन्धन तो मात्र प्रतीक हैं। कलियुग व सतयुग के सन्धिकाल पर ईश्वरीय शिक्षायें धारण कर माताओ-बहनों ने दूसरों को भी पावनता के पथ का पथिक बनाया है। मनुष्य को विषय-विकारों से मुक्त कराने के कारण ही तो इसे विष तोड़क पर्व भी कहा जाता है। कलिकाल में रश्म-रिवाज बस राखी मानते हुए लोग और ही पतन के गर्त में गिरते जा रहे हैं। जबकि रक्षाबन्धन सर्वोच्च जीवन जीने के लिए पावनता का बीड़ा उठाने के लिए मनाये जाने वाला अति महान पर्व है। इसी के द्वारा आत्मा-आत्मा भाई-भाई की वृत्ति से राजयोग जैसी ऊंची पढ़ाई पढ़ी जा सकती है। इस आध्यात्मिक ज्ञान ज्योति से ही स्वयं प्रकाशित हो हम कुल दीपक बन जग का अंधियारा मिटाने के भी निमित्त बन सकते हैं।

भाई-बहनों की सच्ची पावनता का परिचायक है। यह स्थूल रक्षा के लिए नहीं बाधा जाता नहीं तो पिता-काका-मामा जैसे बड़े रिश्तेदारों को भी राखियां बांधी जाती। साथ ही किसी के भाई नहीं हो, बहुत कमजोर वा छोटा हो या बहुत दूर रहता हो तो उन बहनों की सुरक्षा ही न हो पाये। भारत में क्षत्रिय लोगों को रक्षक माना जाता। फिर तो सभी बहनें उनको ही राखी बांधने लगें। यह पर्व पवित्रता के शुभ रश्म हेतु प्रारम्भ हुआ। बाद में चलते-चलते इसे शारीरिक रक्षा हेतु माना जाने लगा। तभी तो इसे पुण्य प्रदायक पर्व भी कहा

जाता है। कच्चे धागे तो नगण्य होते पर उनमें छिपे विश्व बन्धुत्व जैसे मूल्यों को मापा नहीं जा सकता है। परम कल्याणकारी शिव पिता काम-क्रोधादि महा वैरियों से जन्म जन्मांतर तक सुरक्षित रखने के लिए ब्रह्माकुमारी बहनों द्वारा अभी पावन राखी बंधवाते हैं। योगी और पवित्र बनाने वाली सच्ची राखी बांधकर सभी को आत्मा के रूप में भाई-भाई वाली दृष्टि-वृत्ति पक्की करवाते हैं। तभी तो पुण्य आत्मा बनाने वाले इस पर्व को बहनों के अलावा पवित्र समझे जाने वाले ब्राह्मणों द्वारा भी विधिवत बंधवाकर इसे पुण्य प्रदायक पर्व भी कहा जाता है। ब्रह्ममुख वंशावली ब्रह्माकुमारी बहनें भ्रृकुटी में चन्दन-केशर और अक्षत का तिलक देकर आत्मिक वृत्ति की स्मृति दिलाती हुई मधुर स्वभाव बनाये रखने हेतु मुख भी मीठा कराती है।

इस बन्धन में नर-नारी का ही नहीं विश्व बन्धुत्व भी समाया हुआ है। जिसमें बंधकर चलने से ही हमें ईश्वरीय जन्मसिद्ध रूप से प्राप्त होगा। आत्मिक रूप में भाई-भाई, राजयोग की यही पढ़ाई, वाले सिद्धांतों पर चलने से ही हमें जन्म सिद्ध रूप से विश्व राज्य अधिकार भी मिलेगा। सम्बन्धों व पदार्थों से ममत्व निकाल कर पापकटेश्वर में ही एकाग्र होने से हम भय मुक्त शीतल व सामान्जस्य पूर्ण होते जायेंगे। तेरे-मेरे में ही उलझे रहनेवाले, जहान को जहरीला बनाकर विकार-विष व ज्ञान-अमृत में अन्तर ही नहीं कर पा रहे हैं। दैवी बहनें रक्षा सूत्रों द्वार याचना नहीं करती, पर पूज्यनीय-बन्दनीय बनने हेतु मनमनाभव के महामंत्र में स्थित रहना सीखाती है। प्रभू प्यार में ही मग्न रहने वाली आत्मा के हर कोर किनारे से संगीतमय सुगन्ध बहती रहती है। ऐसी आत्माओं के जीवन से शांति, चेहरे पर कांति, आंखों में स्थैर्यम व सम्बन्धों में सुवाष भरती जाती है। ऐसे में लोग कांटे समान चुभते नहीं पर सदगुणों के व्यवहारी-व्यापारी बन सर्वत्र खुशहाली बांटते रहते हैं। फलत: रूहानी जीवन से विश्व परिवार जैसी चुम्बकीय पराग बहती रहती है। स्वर्ग में नर व नारी की आत्म ज्योति रहने से कोई भी किसी का भक्षक नहीं होता जो रक्षा सूत्र बंधवा कर सुरक्षा की चाहना करनी पड़े। एक ही घर परमधाम के भांति की विचारधारा से समता का निर्झर बसुन्धरा पर शीतलता फैलाता रहता है।

आज के युग में रक्षाबन्धन के पर्व को परम्परागत नहीं बल्कि वर्तमान परिस्थितियों में सार्थकता के दृष्टिकोण से मनाने की आवश्यकता है। यही रक्षाबन्धन के पर्व की सार्थकता होगी तथा तभी सभी मानवों की सुरक्षा हो सकेगी। यह केवल भाई-बहन का नहीं बल्कि समस्त मानव जाति का है जिसमें सभी मनुष्यात्मायें स्वयं को विकारों से मुक्त रह सकेगी। यही रक्षाबन्धन का संदेश है और परमात्मा का आदेश भी।